JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आदिगुरु शंकराचार्य का आध्यात्मिक वैशिष्ट्य

गरिमा शर्मा

(शोधच्छात्रा)

हिन्दी विभाग

वी. एस. एस. डी. कालेज,

कानपुर, उत्तर प्रदेश

"पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम्।

इह संसारे बहुदुस्तारे, कृपया पारे पाहि मुरारे।।"

भारतीय मनीषियों की ज्ञान विज्ञान की आधारशिला वेद हैं। श्रुति ही समस्त विधाओं का मूल्य हैं। श्रुति के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रस्थानत्रयी प्रमुख है।

- **श्रुति प्रस्थान** - उपनिषद
- **स्मृति** -श्रीमद्भागवद्गीता
- **न्याय** - ब्रह्मसूत्र

आचार्य शंकर ने प्रस्थानत्रयी में अद्वैत वेदान्त को स्थापित किया। अद्वैत वेदान्त में एक मात्र ब्रह्म अथवा आत्मा की सत्ता मानी गयी है। अध्यात्म शब्द संस्कृत के "अधि" और "आत्म" दो **शब्दों** से मिलकर बना है जिसका अर्थ है- **आत्मा की ओर।** आचार्य शंकर ने अध्यात्म में वेदान्त की परम्परा को स्थापित किया। उन्होंने वेदान्त को पढ़ने में चार प्रयोजन बतलाये हैं -

1.अधिकारी 2.विषय 3.सम्बन्ध 4. प्रयोजन

1. **अधिकारी-** जिसनें सभी कर्मों को व कर्मफलों(अर्थात् समस्त छः प्रकार के कर्म) को त्याग दिया है तथा जिसका अन्तकरण निर्मल हो गया है, वह अधिकारी कहलाता है। जिस अध्येता ने यह पूर्ण लिए हैं, वही अध्यात्म को जानने का अधिकारी है। आचार्य शंकर कहते हैं कि अधिकारी को साधन चतुष्टय से संपन्न होना चाहिए।

2. **विषय-** आचार्य शंकर के अनुसार जीव व ब्रह्म का ऐक्य ही प्रमेय है तथा इस मानव जन्म का सम्पूर्ण उद्देश्य है- जीव और ब्रह्म के ऐक्य को जानना।
3. **सम्बन्ध-** जीव व ब्रह्म का ऐक्य तथा उसका औपनिषदिक प्रमाण बोध्य-बोधक सम्बन्ध है।
4. **प्रयोजन-** अज्ञान की निवृत्ति तथा ब्रम्हानन्द स्वरूप की प्राप्ति।

आचार्य शंकर उपरोक्त अनुबन्ध चतुष्टय को प्रयोजन रूप में स्वीकार करते हैं तथा इस जगत् को अज्ञान स्वरूप मानते हैं। आचार्य शंकर के अनुसार, जीव की तीन अवस्थायें होती हैं -

1. सुसुप्त अवस्था 2. स्वप्न अवस्था 3. जागृत अवस्था

मनुष्य तीनों अवस्थाओं में अज्ञान के कारण दुःखी रहता है। स्वप्न संसार तथा वास्तविक संसार तो स्वप्न के जैसा ही है तथा आवरण के हटने पर जीव यह अनुभव करता है कि उसका ब्रह्म के साथ समवेत्-समवाय सम्बन्ध है। माया के भ्रम के कारण उसे यह संसार वास्तविक प्रतीत होता है। जिस प्रकार स्वप्न में देखी सभी घटनाएँ वास्तविक प्रतीत होती हैं; किन्तु स्वप्न के समाप्त हो जाने पर कुछ भी प्रतीत नहीं होता। अज्ञान की दो शक्तियां हैं -**1.आवरण शक्ति, 2. विक्षेप शक्ति**

- **अवारण शक्ति -** जिस प्रकार से छोटे से बादल का टुकड़ा सूर्य को ढक लेता है और अज्ञान के कारण सूर्य दिखायी नहीं देता है, उसी प्रकार से इस संसार में जीव को माया रूपी आवरण ने ढक रखा है, और ब्रह्म व जीव का एकत्व नहीं हो पाता है।
- **विक्षेप शक्ति -** अज्ञान की विक्षेप शक्ति के कारण जीव यह मान लेता है कि जाग्रत रूपी जगत सत्य है। तमोगुण की विक्षेप शक्ति से आकाश की उत्पत्ति होती है, आकाश से वायु की उत्पत्ति होती है, वायु से अग्नि की उत्पत्ति होती है, अग्नि से जल की उत्पत्ति तथा जल से पृथ्वी की उत्पत्ति होती है, इन्हीं पंचमहाभूतों से स्थूल या सूक्ष्म शरीर उत्पन्न होते हैं। पंचज्ञानेन्द्रियाँ, पंचकर्मेन्द्रियाँ, पंचवायु, बुद्धि तथा मन इन सत्रह तत्वों से सूक्ष्म शरीर का निर्माण होता है। आचार्य शंकर पंचीकृत महाभूत, षड्लिंग, दोनों प्रकार समाधि (संकल्प और विकल्प) का विस्तृत वर्णन व व्याख्या करते हैं।

अध्यात्म शब्द अंग्रेजी के **"स्पिरिट"** शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसमें स्पिरिट का अर्थ **"आत्मा"** होता है। उपनिषद् कहते हैं कि-

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः"

अर्थात् आत्मा ही सुनने, मनन् करने तथा ध्यान करने योग्य है। इस संसार में मनुष्य का उद्देश्य स्वयं को जानना व अपने मूल को पहचानना है।

आत्मा के सम्बन्ध में वेदान्त कहता है -

"न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥"

वहाँ न तो सूर्य चमकता है, न चन्द्रमा, न ही तारे तो अग्नि का प्रश्न ही नहीं उठता है। परन्तु उस आत्मा के भासमान होने से समूचा जगत भासमान हो जाता है। ऐसे में आचार्य शंकर जीव तथा ब्रह्म के ऐक्य की संकल्पना प्रतिभाषित करते हैं।

आज मानवीय मूल्यों, विचार, धर्म के होते पतन में आचार्य शंकर का वेदान्त चिन्तन हमें सही मार्ग दिखा सकता है। बाबा तुलसी कहते हैं -

"का मांगू कछु थिर न रहाई, देखत नयन चल्यो जग जाई ।"

अर्थात् आप यदि ईश्वर से अस्थिर रहने वाली वस्तु की मांग करते हैं तो आप अज्ञान की आवरण व विक्षेप शक्ति से ग्रसित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्रह्म सूत्र -शंकर भाष्य - गीता प्रेस, गोरखपुर
2. वेदान्त सार -सदानन्द प्रणीत
3. श्रीमदभगवदगीता -वेदव्यास
4. आत्मा की ओर मेरा पथ - सुनीता वर्मा (जोरबा बुक्स)
5. वृहदारण्यक उपनिषद (शांकर भाष्य)-गीताप्रेस गोरखपुर
6. द फोर अग्रीमेंट -डान बिज
7. योगी कथामृत- परमहंस योगानन्दजी
8. भज गोविंदम- आदि गुरु शंकराचार्य
9. आत्म बोध - आदि गुरु शंकराचार्य
10. अपरोक्ष अनुभूति - आदि गुरु शंकराचार्य
11. शिवानंद लहरी – आदि गुरु शंकराचार्य